

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 176

उपनयन विधि

श्री गुरु विधि

जातकम्

ॐ नमः शिवाय नमः ॥ गंगा डपन
यन विधि ॥ इति शायकं पथ्य इति ॥ ॥
आयाः आलक्षिणा ललाचक ॥ कलसः स्तंभः
याः इति मिद्रमः मिः माहनीः रायः थापि
नमः आमाजीः थापिः कपिः दिश्वी ॥ शुद्धि

थापनारं नमः ॥ ॥ थन शुशाय गजपा
शायक ॥ थनारं नमः शायक ॥ काप ॥
रुद्राना नमः शायक ॥ रुद्राना नमः शायक ॥
रुद्राना नमः शायक ॥ रुद्राना नमः शायक ॥
मगुयूषो रुद्राना नमः शायक ॥ ॥ रुद्राना

कावत्सः यं च वदः वदिसन्ः यिप हस जूयं
कायः धूयः आः पाः पू मा यु ॥ गू जू म धु ल ला
व मा व लि ॥ वि थ ऊ न ॥ काय र ल पू ज्ञाः मह
नी ला ध न ॥ सि द्ध ग न ॥ उ द्या ग ॥ म ह नी रु य
ज ह्म द कः कि काय वि स र्ज न ॥ थ न थि स

॥ ५५ ॥
मा धि र न ॥ थ न थाय पू ज्ञा ॥ धू न जाः क मा
जिः थ यिः क पि पू ज्ञा या य ॥ का व र धू य ॥ धा
न ॥ ज क व धू क णं का णं ज क मू ख च रु र्ह ज
न व डो व न जा व न्या हा दा रु य स रु पि नाः
उ ज्ञा णां यि न्द्र या य चः उ जा श्र म न धा जि ती

ॐ य जा लां उ ऊ ण कि क किं ध जा य जा म य
जा य जी स मा सी नं सि ल सि न्धु ज ध जि धी ज
कां व जा ध जा द वी प गा का क र्ण र ण रि ना
प रं ग वा ल को मा जी म धा क गा य धी प रं स
धा यां व हि नू पि च रा व य नू प ज म ष्व जी ॥

ॐ नमः ॥ र ग व न् अ म न् अ वा ल को मा जी
दे वीः सि धि नीः वा धि नी दे व गा र द्वा ज का य
या या च म ना थ प्र नि रु सा हा ॥ स्वा वा य ॥ ॐ
दे वा मा यी न नः स्वा हा ॥ ॐ रू रू रू रू को मा जी
ये न मः स्वा हा ॥ ॐ जे त् च स्वा य न मः स्वा हा ॥

॥ क म जी प र्ण ॥
जा य ॥

ॐ वज्रयनमः स्वाहा ॥ ॐ मानद्वयवर्माय
नमः स्वाहा ॥ ॐ कजं डवक्रायनमः ॥ ॐ जूडग
न्यनदी यजाजयनमः स्वाहा ॥ • ॥ ॐ सिंधि
न्येनमः स्वाहा ॥ ॐ सिंहमूखायनमः स्वाहा ॥
ॐ कया जायेनमः स्वाहा ॥ • ॥ ॐ बांधिधीन

मः स्वाहा ॥ ॐ बाधप्रयायेनमः स्वाहा ॥ ॐ पिग
वर्धयेनमः स्वाहा ॥ ॐ कया लहस्त्रायनमः
स्वाहा ॥ • ॥ पूजा जास्त्राय ॥ • ॥ ॐ कोमाजी
यजमाषादि • कोमाजीपक एव न स्वजी • ॥
एवमृषिमहादेवा • कोमाजीप्रसमाये हं ॥

॥ ॐ सिंहमूर्ति वज्रं जूयं दुःखा कला लवटना
शिवलादिद्रुगिहिवर्धनमस्तु सिद्धिनी गव
पादपूरा ॥ ॥ ॐ व्याधिनीयी गहप्रिगवर्ध
नकवकुपनप्रुंठमस्तु खलागपायकलध
गं व्याधिनी देवी नमःस्तु गपादपूरा ॥ ॥

~~समस्तधातुः मन्त्रः यधर्मा ॥ मन्त्रः ॥~~
~~धनदिविवायुका ॥ जायमान ॥ ॐ श्री गुरु~~
~~गगययलाहा ॥ धृष्टः ध्यान ॥ विन्दुः रुद्रमय~~
~~कायासि ॥ श्रीः वाः ॥ उग्रवसिष्ठः जयंशुः~~
~~श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः~~

निरुद्ध स्थाहा ॥ ~~मिमांसिक ॥ मधुवितर्क~~
~~सिंहलि ॥ धनधायसूक्त्या ॥ ना ना ॥~~
आचमनं प्रगिरु स्थाहा ॥ ~~देवकायकका~~
~~च ॥ द्वापां सं नम ॥ शिमधू प्राप्ते स्थाहा ॥~~
~~वसुधूने व्याम ॥ पूंग प्राप्ते प्रगिरु स्थाहा ॥~~

॥ नाचिकेन प्राप्ते स्थाहा ॥ ~~कनाः यधि ॥ पं~~
~~चयकडानप्राप्ते स्थाहा ॥ चतुस्तानि गताः~~
॥ मृगमांसं च न च प्रमास प्राप्ते स्थाहा ॥ ~~स्व~~
~~ः जः स्थाः ॥ शिम मृस्य मांसं प्राप्ते स्थाहा ॥ घा~~
~~सासक मांसकाने कसि रूपचि नं ॥ ई प्राप्ता~~

यखा हा ॥ ~~सि रूप चिं~~ ॥ उपा ना यखा हा ॥ श्री
~~प्रप चिं~~ ॥ श्रु व्या ना यखा हा ॥ दप्रूप चिं ॥ समा
ना यखा हा ॥ ~~वो ना प चिं~~ ॥ व्या ना यखा हा ॥ न
~~ना प चिं~~ ॥ का न सा य कः न य सां स व न कः ॥
उं ग डा व जं द द खा हा ॥ उं डा डा व जं द द खा

हा ॥ उं श्रु न्न पा ष न खा हा ॥ ~~व ड न य न क~~ ॥ द
धि श्रान य खा हा ॥ ~~मा स मा लु रिं ग य~~ ॥ स्व सि
~~वा क~~ ॥ ~~ना वा य क~~ ॥ ~~ग य वा ल वि य~~ ॥ थो य
~~र चि क~~ ॥ ~~क लं का य~~ ॥ ~~ग्रा पा प्र~~ ॥ धू मा ग
वि र ह न का य पा या प्र नि रु खा हा ॥ स्वो वा ॥

॥ उं ग डा व जं द द खा हा ॥
॥ उं डा डा व जं द द खा हा ॥

धूमां गजियखा हा ॥ प्रकृति यखा हा ॥ दामि
दियखा हा ॥ चद्रियखा हा ॥ प्रधियखा हा
॥ पूजाः नास्याः समयः हं कालः कुमि ॥ प्रिये
का लासाय इयगिकलिक नथ च प्रनदव
गास्वेत्र कस्यं नमस्ते ॥ कले काय ॥

धूम्रधू का वा कृष्णः धूम्रधू का वा कृष्णः
दक ॥ किय गं के ॥ गृष्णधू का ॥ दक ना आ ॥
नया ग ध ॥ ॥ धं वा कृष्ण काय ॥ सिद्ध मह
नि क का खं का यगिय ॥ इत्युत्तमि य कः
धन का नाजि का यदि र्वो क्ये यः य चाण
इंद्र य का देव इय क कायः धन धं वा कृ

वलिः विसर्जनि ॥ कायपूजाः महनीरुय ॥ धनज
हस्रदकिकारो ॥ प्रिसमाधिदमा ॥ धनकलसथा
यंपूजाः कमान्नीपूजा ॥ धनवेष्टपूजा ॥ धूनका
मचावलंपीयाहस्रस्रहिकस्रदे ॥ गृन्मथुल
दनकेः गृकालसूखवलि ॥ नीलाइनमगह
ः गचागच ॥ ॥ धनसिधनक्रिकिकापिगुपात्र
चिवसनिवासनदक्रिनाद ॥ २८ संज्ञानकागय

खकन ॥ सिध्यावान्च ॥ एगृन्ः गृहमिथ्या कथं
नज्ञामिः यावदुक्तिवन्ससूत्र ॥ ॥ हनाथहृ
जुग्राडाकिरुल्लोः ॥ धनार्थकयानचयसिदास
वकालः नमयानाडाधृगृचय्याधजलप्राडाचा
नमालः कनमरुतः गृथनः यद्रूपचोधज
यधूनधकं ॥ क्रिकिलिकापिगुपात्रः चिवस
निवासनः वृधः धर्मः संघः गृन्सू क्रिखनाप्रसंन

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कामाक्षि नमोऽस्तुते ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



॥ ॐ नमः ॥
॥ ॐ नमः ॥
॥ ॐ नमः ॥

ॐ नमः श्री बडस चायनमः॥ ~~आमना जाग कर्म~~
~~माहः॥५॥ श्री कोः कलसः एकैः राग्रसः क्रूरैः~~
~~सिद्धमैः वायः थापिः दिदिदोः मगः धृष्टि थाप~~
~~ना॥ ॥ पूजा ए सुसंकल्प वाकं॥ काय॥ जाग~~
~~कर्म धृष्टि पाण भक्ति या निमित्तार्थः पूरे कर्म~~

धर्मस्तु बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार DH 176

सुसंपूर्ण ए सुसंकल्प नमस्ते आमि॥ ~~॥ ॐ नमः~~
~~पूजा याग॥ धृष्टि का॥ धन ए धूम सुसद्वनः॥ ॥~~
~~विशुद्धि॥ काय ए पूजा॥ सिद्धमैः॥ जहस~~
~~म सुसद्वनः॥ जहस कि काय॥ विशुद्धि मा धिद्वन~~
~~॥ धृष्टि काः कलस पूजा माह॥ कलस माह वनः~~

~~अंशवर्द्धनय ॥ ध्यान ॥ कारुण्यमयं नाना~~
 जलसंमंगलास्त्रिंशत्पञ्चसंयुक्तं कल
 षाकोलमहाद्यं गन्तव्यं वरुणाय नमः
 यसंयुक्तं ॥ श्रीकृष्णसंकाशं गणपतयं वि
 णवयम् ॥ गुरुश्रावणं उक्तं धर्माद्वया

यसि संस्ति गं लं का प्र सर्व सं वृद्धं वा धि चि ह्ना
मृगाद के य च्छु य समा गृह्यं पूष्य जा डा रु
गे सहः सम य स त्व मा वा ह्यं ज प द क्षा रु चं
ध मे ग मा का षा रु च म य य धि मं वि णा व श
न ॥ ॥ य च्छु य के का जा य ॥ न न ॥ ॥ ॥ सर्व

॥ वडं विद्य ॥ उँ वडामगादक ०००० ॥ नि
ला नयाय ॥ सखा वडु धा पा दार्प ॥ रुगव
नूणामगुणस्य पूर्वकलसमध्वविजाडिगः
वडस स्वः वेजा चनः विद्युल श्वजः महका
जः वसूधजाः पञ्चरुमायाः अन्तिः वेध

वर्णरहा चकार पाशाचमत्रार्पणमिच्छा
हा ॥ ~~सांवाय~~ ॥ उँ वडसुखारानम स्वाहा ॥
महामध्वमय वनमः ॥ उँ आर्यवेजा च
नाय स्वाहा ॥ ~~सादि~~ ॥ उँ गंगं शपमय स्वाहा ॥
~~सादि~~ ॥ उँ मंमहा कावाय स्वाहा ॥ ~~सादि~~ ॥ उँ

११०

इं वं व सु ध जा य स्वा हा ॥ ~~स्वादि~~ ॥ इं न द्रा य स्वा
हा ॥ ~~स्वादि~~ ॥ इं किं णी यं न म स्वा हा ॥ इं का वि
आ प दा य न म स्वा हा ॥ इं द्रो स्र स्र श्र न म स्वा
हा ॥ ~~क्र सं या~~ ॥ इं कों कों लु क्षि द वी न म स्वा
हा ॥ इं कों कों ध न लु क्षि न म स्वा हा ॥ इं कों कों

ध न लु क्षि न म स्वा हा ॥ इं र्वे प्र व र्श य स्वा
हा ॥ ~~स्वादि~~ ॥ इं इ म् नो य स्वा हा ॥ ~~स्वादि~~ ॥ इं
न द्रा य स्वा हा ॥ ~~स्वादि~~ ॥ य च य च प्र जाः
जा य ॥ ~~माय~~ ॥ न म श्र व इ स त्वा य ॥ ~~हान~~
स त्वा य न मः य च र्ध स्र रू पा य ॥ सर्व

गायत्र्या गगात्मने ॥ नमस्तु सूर्यायः ॥
 सूर्याय नमः ॥ मह्यग्निर्वाग्न्ययविद्य
 ययविद्यजाता विनायकः ॥ अश्विनस्तु
 नमः ॥ मह्यग्निर्वाग्न्ययविद्यजाता विनायकः ॥
 अश्विनस्तु नमः ॥ मह्यग्निर्वाग्न्ययविद्यजाता विनायकः ॥

शान्तप्रकृत्यः कर्त्तव्यकृत्यसुधं नार्थमहा
काप्रं नमः लुग ॥ ~~न ह नार्थमहा~~ ॥ वसुधा
मासदाने वादाप्रिद नवगात्रनीत्याधनूपा
यकाददीलुक्कि सिद्धिवसुप्रदा ॥ ~~संया~~ ॥
नराएडा इयासोस्याः कपि नारावृणावमि

पुसिद्धिमहालक्ष्मिश्चायुषायाग्यसुषुदं ॥ ग
अमा ॥ ७१ ॥ यं ण य अगिदं वी सर्वविद्याग्रथपु
दाः सिन्धुयपाया क्रुधजापनासनास्मितासि
गां ॥ ~~क्रुधजा~~ ॥ सर्वकामपदा लक्ष्मिः सर्वसं
यस्य दानमः कमलादर्शसहस्रा गां समाभिक

मला कलां ॥ ~~सिद्धमेवा~~ ॥ नीलनीलां च निला
राः ~~आदि~~ ॥ गान्धारी ॥ इन्द्रनीलमनीः स
दि ॥ ~~रत्नकला~~ ॥ ॥ यक्षपञ्चावशुका ॥ सम
य ॥ ~~धाराः गङ्गा~~ ॥ यधर्मा ॥ ॥ यनदिदिदी
कृतेश्वर ॥ धाम ॥ विद्मदमयकायासि

॥ श्री ॥
॥ श्री ॥
॥ श्री ॥
॥ श्री ॥

३/
+

धर्मं वक्रा नूतं निरुं उग्र च द्वाग रुद्र वी ध्या
न पूष्यं नमः ॥ ~~श्रीः पाः पू~~ ॥ एग वन अम न
७। उग्र च लि नूत मा वि का रुद्र च क या शा च
म नं प्र गि रु खा हा ॥ ~~सां वी~~ ॥ रुद्र रुद्र उग्र च द्वा +
ये नमः खा हा ॥ चिदु का य नमः खा हा ॥ दिवा

नूत य नमः खा हा ॥ रुद्र च चिदु का य नमः खा हा
॥ नूत मा वि का य खा हा ॥ ~~प च य चा पू द्वा~~ ॥
+ ~~सां वी सां म न~~ ॥ ~~य धर्मा~~ ॥ ~~गी त्र~~ ॥ उ मा नूत
व र्णु सं का सं ख र्ण रुद्र क वि नू कि का म नू यी म
हा दे वी उग्र च लु नम रुद्र ॥ ~~न स न~~ ॥ च सि

ऊं की नो ली मू सं का मं धा ज इ ह यान का
 ॥ उ ह क ण वि भू पा कू कृ य पा ल व ह इ ह नः ॥
 ह हि व लि प गि ग क र ह न र द ह र य च र ख
 ख खा हि र उं ड र वि भू रं व व भू य व लि य वि ग
 क र की हं रु ट् सा हा ॥ ~~य च न वा न भू जा ॥~~

~~यः धा राः म नः ॥ य ध र्माः ॥ भा ३ ॥ ॥ य न म~~
~~वा व लि पि पा ह य लु लि सु सु न ॥ गू य म लु न~~
~~रं कः लो क पा व लि भू का ॥ नि ला क नः म नः~~
~~रु ना चा ॥ स मं वि यः स रु य क ॥ सु रि वा क~~
~~ऊं क न ड य क वा क ॥ च कू र म हा च दि व्य च~~

॥ य न वा व लि पि पा
 व र्मा ॥

हविषधने स्वाहा ॥ ~~वसुसुहायसुसुहाय~~
~~कं ॥ नामकुर्य ॥ असूकनामनथागनवईस~~
~~वसु ॥ धनदीयकं ॥ अचनेपुनियनिकुला~~
~~ह ॥ पचासमन्त्रियेथिकं वासु ३ वाक ॥ शिम~~
~~धूपसुन स्वाहा ॥ नासिकं ॥ धूमागामि ॥ वासु~~

पूजा ॥ आः पाः पू ॥ धूमागामि स्वाहा ॥ पद्मसि
यस्वाहा ॥ हामिदिशस्वाहा ॥ चंद्रियस्वाहा ॥ धिं
धात्रिस्वाहा ॥ प्रधियस्वाहा ॥ ~~सायः धाः म~~
~~न ॥ ये धमनी ॥ नायु ॥ यियाकलासायः ॥ इयमि~~
~~कलिकन ॥ अचनदवगासंवे ॥ अकसुप~~

नमस्तुभे ॥ विसर्जनं या नमो ॥ धनं हि
रुद्राय ॥ वाद्यं गुरुं या नमो ॥ कुरुमानं या नमो
हृद्यं दनं कुरु ॥ स्वाकिं गुरुं ॥ गुरुं गुरुं ॥ दकि
ना नमो ३ः नमो गुरुं धनः वीणाः नादः नमो
वकादिः नमो ॥ दि २ थूदिना गुरुं ॥ हि

~~किल यच्छाय ॥ थाप २ दि २ ॥ मयान ॥ धू
 का ॥ कमायनः २ ॥ कमायनः २ ॥ कमायनः २ ॥
 कला ॥ शिष्यः २ ॥ थापिः २ ॥ इति आगं
 कला ॥ धूनका ॥ दिदि वीछाय ॥ दि २ आगं
 वाविक ॥ धका ॥ नि किं नं इति विडा गला~~

गमालामसुरासुराय ॥ ननुनिमिचिअयकम
नामैमपुत्रिधुंका ॥ सिधिसमयकाय ॥ सम
राचककाय ॥ कामिसुरय ॥ कामिवडि काय
नसिवाकका ॥ वडि ॥ पुलायाकका ॥ वडि
यकाइ ॥ वागा ॥ कासिनाकुम ॥ दिदिमा ॥ धुहि

धुनकाथकासिनाकुम ॥ सलुअकाय ॥ नडिनाम
कासि ॥ सिधिसमयकाय ॥ वागमलसकाय ॥ ॥ वडि
लावा ॥ रगुथकासिनाकुम ॥ दिदिमा ॥ धुहिमान
कासि ॥ सलुअकाय ॥ वागमलसकाय ॥ ॥ वडि
लावा ॥ रगुथकासिनाकुम ॥ दिदिमा ॥ धुहिमान
कासि ॥ सलुअकाय ॥ वागमलसकाय ॥ ॥ वडि
लावा ॥ रगुथकासिनाकुम ॥ दिदिमा ॥ धुहिमान